

— अग्नि 1) *adire, zugehen auf, hingehen —, treten —, kommen —, sich hinbegeben zu, sich drohend wenden gegen, begegnen:* अग्नि स्पृधै यासिषद्ब्रवाहुः RV. 1, 174, 5. AV. 4, 29, 7. अन्वत्र राज्ञामग्निं यातु मन्युः 6, 40, 2. 10, 1, 15. मूढतं माग्निं यातम् 11, 2, 1. KAUC. 14. — तत्रैतं नागराः सर्वे सत्कारिणाभ्युस्तदा MBH. 2, 952, 3, 2259. 14443. 5, 6099. 7, 2630. HARIV. 11031. KATHĀS. 30, 15. 36, 16. 84, 25. BHĀG. P. 4, 23, 36 (अनुयाति ed. Bomb.). कुत्रैरादभियास्यमानात् (pass.) RAGH. 5, 30. शत्रुम् MBH. 2, 191. 4, 2142. 5, 7447. 7483. ये च — अग्नियाता धनंनयम् 6, 5542. परचक्राभियात् (mit pass. Bod.) 12, 4729. राष्ट्रं तस्याभियास्यामः 4, 978. समुद्रम् HARIV. 322. गिरिश्रेष्ठम् 6935. R. 2, 30, 16. गृहम् R. GORR. 2, 3, 28. 47, 6. 73, 7. 8. 4, 25, 7. 41, 8. 5, 73, 2. 6, 16, 13. KIR. 5, 1. BHĀG. P. 3, 24, 9. 5, 13, 6. भूपतेः श्रियम् RAGH. 9, 30. स्वर्गम् zum Himmel gehen so v. a. sterben DAC. 2, 55. संकेतनम् zu einem Stelldchein VET. in LA. (III) 20, 14. ohne Object herbeikommen MBH. 5, 7133. 12, 4264. HARIV. 4993. R. 1, 23, 10. 2, 71, 21. R. GORR. 1, 21, 1. BHĀG. P. 1, 9, 37. 3, 22, 18. 8, 11, 13. 9, 6, 17. 8, 10. देवविमानानि — अग्नियातानि MBH. 3, 1763. einen Angriff machen KĀM. NĪTIS. 13, 2. 13. kommen, von der Zeit: कालो ऽभियातस्त्रिणावचतुर्गुणविकल्पितः (genauer wäre अग्नियातः verstrichen) BHĀG. P. 9, 3, 33. — 2) an Etwas gehen, sich hingeben: वासम् so v. a. sich niederlassen R. 7, 66, 15. पापाडम् sich der Ketzerei hingeben BHĀG. P. 5, 14, 13. — 3) theilhaft werden, mit acc. MBH. 5, 1699. 13, 5851. न तु तद्वन्नति पय्यस्तदपडो गतवैरो ऽभियाति BHĀG. P. 5, 13, 15. ऐश्वर्यमभियातः R. 5, 88, 10. — Vgl. अग्नियातर fgg. — caus. herbeikommen lassen, hinsenden BHĀG. P. 5, 2, 3.

— प्रत्यग्नि auf Jmd (acc.) losgehen BHĀG. P. 10, 17, 6.

— समग्नि (zusammen) zugehen auf, hingehen zu (acc.); herbeikommen MBH. 1, 1338. 7, 3974. 8, 3978. 9, 1547. HARIV. 10309. MĀRK. P. 405, 22.

— अत्र 1) herbeikommen: अत्र स्वयंक्ता द्विच या वृषा ययुः RV. 1, 168, 4. नेह भद्रं रत्नस्विने नावयै (infin.) नोपया उत 8, 47, 12. — 2) abbitten, abwenden: त्वं नो अग्ने वरुणास्य ह्येका ऽव यासिमीठाः (VS. PRĀT. 3, 82. P. 3, 1, 34, VĀRT.) RV. 4, 1, 4. नू चित्सुदानुर्व यासडुयान् 6, 66, 5. अत्र देवैर्देवकृतमेनो ऽयासिषम् VS. 3, 48. अत्रयाताम् RV. 1, 94, 12 halten wir für fehlerhaft st. अत्रयाता nom. ag. — Vgl. अत्रया, अत्रयातर fgg.

— आ 1) herankommen, kommen nach, in, zu (acc.): आ पूर्णया नियुतो यावो अघ्नम् RV. 1, 135, 7. 168, 6. आयै infin. 2, 18, 3. 4, 16, 1. अस्तम् 10, 20, 1. 5, 61, 1. वर्तिः 8, 22, 17. 10, 130, 1. आ — अचक्र 1, 167, 2. 4, 20, 2. 44, 5. AV. 3, 8, 1. परो यात् पितरं आ च यात् 18, 3, 14. ÇĀT. BR. 14, 7, 4. 43. आततापिनमायातं ह्यन्यात् M. 8, 350. MBH. 1, 717. 3, 2182. 2239. 5, 6065. R. 1, 9, 53. 2, 34, 16. 39, 10. 40, 42 (आयात्ती mit der ed. Bomb. zu lesen). 91, 9. R. GORR. 1, 66, 11. 3, 62, 29. KĀM. NĪTIS. 13, 56. RAGH. 12, 64. Spr. 371. fg. 374. 1379. KATHĀS. 12, 65. 13, 29. 15, 46. 18, 167. 275. 356. 23, 204. RĀGĀ-TAR. 5, 31. 341. BHĀG. P. 1, 11, 17. 14, 2. 7. 3, 21, 26. HIT. 9, 6. 18, 10. fgg. ÇUK. in LA. (III) 33, 3. 7. तेन श्रुत्वायातमपि (impers.) VET. 8, 6. ग्रामात् P. 1, 4, 24, Sch. वनात् R. GORR. 2, 100, 44. KATHĀS. 18, 280. 26. 4. RĀGĀ-TAR. 1, 330. युतो ऽयमायाति MBH. 4, 300. त्रिपष्टिषोडशनायाता KATHĀS. 13, 32. संमुखम् entgegenkommen RĀGĀ-TAR. 5, 146. क्वास्तिनयु-रम् MBH. 5, 5964. ÇĀK. 14, 1. KATHĀS. 18, 120. 52, 25. 53, 182. RĀGĀ-TAR. 2, 114. NĀLOD. 3, 2. यज्ञम् R. GORR. 1, 43, 23. स्वर्गम् 4, 17, 24. कालिन्दी-

मध्यम् R. SCHL. 2, 53, 19. अतिक्रम्य VIKR. 121. KATHĀS. 42, 107. अस्तम् untergehen und sterben RĀGĀ-TAR. 3, 122. 4, 366. कार्पाययम् zu Ohren kommen ÇĀK. 79, 12. रामम् BHĀTT. 5, 57. मयं शरणम् BHĀG. P. 7, 10, 52. 8, 8, 36. त्वद्वहे PAÑKĀT. 214, 4. लक्ष्मीरधनस्य पुनर्लाचनमार्गे ऽपि नायाति KATHĀS. 33, 32. त्रिलौघो भृशमाययौ 12, 111. परत्र च सहायाति न भोगा नार्थसंचयाः 51, 28. आयाता मधुयामिनी Spr. 3713. अष्टमे ऽत्तर आयाते BHĀG. P. 8, 13, 11. यस्य धर्मविहीनस्य दिनान्यायाति याति च Spr. 2432. नायात्यकाले शिशिरोत्तवर्षाः 4379. भयमायातम् VARĀH. BRH. S. 46, 44. पुनराया wiederkommen R. 1, 4, 75 (80 GORR.). 42, 23. 2, 40, 48. पूरा नदीनां पुष्याणि तत्राणां शशिनः कलाः । क्षीणानि पुनरायाति यौवनानि न देहिनाम् ॥ KATHĀS. 53, 110. so v. a. wiedergeboren werden BHĀG. P. 3, 32, 15. अनायातं (zurückkommend) त्वहेरात्रात्स्नेहम् (vom Klystier) SUÇR. 2, 214, 19. स्नेहवस्तावनायाते 20. sich bei Jmd (acc.) einstellen: तेन तस्याययौ निद्रा KATHĀS. 29, 167. निद्रास्त्री — अय्य नाययो 43, 183. zu Jmd (acc.) kommen so v. a. Jmd treffen, Jmd zu Theil werden: तामायाति शिली-मुखाः (Dienen und Pfeile) स्मरधनुर्मुक्तास्तथा मामपि Spr. 2579. अनार्यवृत्तम् u. s. v. अनर्याः तिप्रमायाति 3466. मामेव चैतान्यायाति महारत्नानि KATHĀS. 33, 63. eingehen —, aufgehen in (acc.) BHĀG. P. 9, 20, 27. — 2) in einen Zustand, eine Lage, ein Verhältniss kommen, — gerathen; theilhaft werden, erlangen; mit acc.: वशम् SUÇR. 1, 149, 14. वन्धनम् Spr. 844. दर्शनम् sichtbar werden VARĀH. BRH. S. 11, 40. 48. मृत्युम् 14, 33. तुलाम् RAGH. 19, 50. विक्रियाम् Spr. 3234. 3314. निर्वेदम् MUND. UP. 1, 2, 12. तोषम् Spr. 383. संकोचम् 3238. नवीभावम् KATHĀS. 14, 63. प्रकाशम् Spr. 3848. प्रवोधम् ÇĀK. CH. 91, 11. जयम् Spr. 2292. संतयम् RĀGĀ-TAR. 3, 403. VARĀH. BRH. S. 5, 26. प्रधंसम् 76. विनाशम् 46, 41. प्रसवम् 21, 7. प्रसूतिम् 10. विप्रुद्धिम् 106, 4. विवृद्धिम् 53, 84. वृद्धिम् 29, 13. RAGH. 17, 41. KATHĀS. 52, 366. तृप्तिम् 21, 9. RAGH. 3, 3. उन्नतिम्, अद्योगतिम् Spr. 3299. व्यक्तिम् SARVADARÇANAS. 90, 2. वैपुत्यम् RĀGĀ-TAR. 4, 712. दैर्घ्यम् VARĀH. BRH. S. 11, 33. वाल्मभ्यम् 73, 6. 83, 7. मान्यत्वम् 4. एकत्वम् HARIV. 10674. हेतुताम् Spr. 357. 3572. पञ्चत्वम् KATHĀS. 34, 20. 41, 12. RĀGĀ-TAR. 5, 376. — 3) hervorgehen, resultiren SARVADARÇANAS. 23, 4. 79, 9. — 4) angehen, sich für Jmd (gen.) schicken; mit infin.: वक्तुं नायाति राजेन्द्र एतयोर्नियमस्थयोः । अर्वाङ्क्षीयात् MBH. 2, 831. — Vgl. आयात fgg., क्रमायात, मार्गीयात. — caus. s. आयापन.

— अत्या vorübergehen an (acc.): अत्यायाहि शश्वतः RV. 3, 35, 5. 5, 73, 2.

— अत्र्या herbeikommen, kommen nach, zu MBH. 2, 1213. 3, 246. 12305. पुरम् R. GORR. 1, 68, 16. 2, 73, 14. MĀRK. P. 125, 47. zu Jmd MBH. 1, 562.

— उदा sich hinaufbegeben zu: सभाम् KAUC. 17.

— उपा 1) herbeikommen, kommen nach, zu RV. 1, 171, 2. 4, 21, 1. 5, 53, 3. आ नो देवेभिरुप देवहृत्तिमो याहि 7, 14, 3. उपायातं द्राघुषे रथेन वहन्ता 71, 2. 72, 1. 8, 81, 10. प्रयुक्तो ऽयमुपायाति MBH. 3, 738. 4, 231. HARIV. 6200. R. GORR. 1, 12, 32. 4, 33, 22. KATHĀS. 23, 268. 30, 54. BHĀG. P. 10, 23, 18. राजमार्गम् MBH. 1, 5451. राजधानीम् R. 1, 9, 66 (64 GORR.). R. GORR. 1, 2, 22. KATHĀS. 16, 87. 33, 89. BHĀG. P. 3, 21, 48. यज्ञम् R. 1, 73, 7 (73, 8 GORR.). तस्यातिक्रम्य KATHĀS. 10, 102. 13, 12. अस्तम् untergehen und auch sterben 10, 129. RĀGĀ-TAR. 4, 6. 5, 126. माम् MBH. 7, 2814. KATHĀS. 16, 17. 18, 231. 20, 181. 22, 193. 33, 13. 143. 45, 209. 54, 169. 56, 406. MĀRK. P. 72, 17. BHĀTT. 4, 44. — 2) in einen Zustand, eine Lage, ein Verhält-